पूर्वाग्रह के स्रोत
(Source of Prejudice)

सभी व्यक्तियों में हर प्रकार का पूर्वाग्रह नहीं होता है। किसी में यौन पूर्वाग्रह, जाति पूर्वाग्रह तथा उम्र पूर्वाग्रह अधिक विकसित होता है, तो किसी में जाति पूर्वाग्रह, धर्म पूर्वाग्रह आदि अधिक मजबूत होता है। जिसके भिन्न-भिन्न स्रोत होते हैं। आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों ने पूर्वाग्रह के विकास एवं स्रोतों की पहचान की है, जिनमें सामाजिक सांस्कृतिक, संज्ञानात्मक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों को अधिक महत्वपूर्ण बतलाया है, क्योंकि इनसे पूर्वाग्रह की व्याख्या अधिक वैज्ञानिक ढंग से होती है।

→ **सामाजिक - सांस्कृतिक स्रोत** — इसके अन्तर्गत पूर्वाग्रह के उद्भव विकास एवं सम्पोषण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों पर बल डाला गया है। जिनमें प्रमुख कारक निम्नांकित हैं —

• **शिक्षा (Education)** — पूर्वाग्रह पर शिक्षा का काफी प्रभाव पड़ता है। समाज में व्यक्ति को औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा दी जाती है। अनौपचारिक शिक्षा पारिवारिक सदस्यों विशेषकर माता-पिता द्वारा अधिक दी जाती है। जिसमें वे बच्चों को सामाजिक व्यवहार, खेलना, कूदना, भाई-बहन के साथ संबंध, बाह्य समूहों की जानकारी आदि प्रदान करते हैं। माता-पिता यदि बच्चों को किसी विशेष समूह के साथ खेलने-कूदने, संबंध रखने आदि के लिए मना करते हैं, तो बच्चों में उस समूह के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति हो उत्पन्न हो जाती है। औपचारिक शिक्षा बच्चों को स्कूलों एवं कॉलेजों में प्रदान की जाती है। जिससे व्यक्ति में किसी विषय, समस्या या अन्य व्यक्तियों के प्रति सही तरीके से सोचने की शक्ति विकसित होती है। जिससे ऐसे व्यक्ति आसानी से पूर्वाग्रह के शिकार नहीं होते हैं। समाज मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने शोधों में पाया है कि जैसे-जैसे औपचारिक शिक्षा के स्तर में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे पूर्वाग्रह की मात्रा में कमी आती है। आलपोर्ट (1954) एवं विलियम्स (1964) ने भी अपने-अपने अध्ययनों में यह दिखलाया है कि शिक्षित व्यक्तियों में अशिक्षित व्यक्तियों की अपेक्षा पूर्वाग्रह की मात्रा कम होती है।

Scanned with CamScanner

• सामाजिक वर्ग (Social class) — समाज मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में यह पाया है कि पूर्वाग्रह पर सामाजिक वर्ग का भी काफी प्रभाव पड़ता है। प्रायः यह देखा जाता है, कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के लोग निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के लोगों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखते हैं।

• नगरीकरण (Urbanization) — नगरीकरण का प्रभाव भी पूर्वाग्रह पर पड़ता है। नगरीकरण की बढ़ती समस्याओं के कारण भी व्यक्तियों में पूर्वाग्रह का जन्म होता है, वे शहरों में बाहर से आकर बसे लोगों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति दिखलाते हैं। प्रायः शहर में रहने वाले गाँव के लोगों को गँवार या बेवकूफ समझते हैं।

• जाति (Caste) — भारतीय समाज अनेक जातियों में बँटा हुआ है। अनेक अध्ययनों के आधार पर समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने यह बतलाया है कि उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों के प्रति अधिक पूर्वाग्रही होते हैं। प्रसाद (1979) ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि उच्च जाति के हिंदुओं में जाति पूर्वाग्रह निम्न जाति के हिन्दुओं की अपेक्षा अधिक होती है। उनके अनुसार हिन्दू ब्राह्मणों में जाति पूर्वाग्रह की मात्रा सबसे अधिक होती है।

•

• धार्मिक समूह (Religious Group) — भारत में अलग-अलग धर्मों को मानने वाले अनेक लोग हैं। सभी अपने-अपने धर्मों के प्रति अटूट विश्वास एवं आस्था रखते हैं। वे उस धर्म के नियमों, रीति रिवाज तथा अंधविश्वासों को भी सहर्ष ही स्वीकार कर लेते हैं तथा दूसरे के धर्म को तुच्छ समझने लगते हैं। फलस्वरूप अन्य धर्मों के प्रति उनकी मनोवृत्ति नकारात्मक हो जाती है और इससे उनमें पूर्वाग्रह का जन्म होता है। सिंह (1980), चौधरी (1958), हसन एवं सिंह (1973) द्वारा किये गये अध्ययनों में यह पाया गया कि हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों में पूर्वाग्रह अधिक होती है तथा उनमें परंपरागत, सामाजिक-राजनैतिक मनोवृत्तियाँ अधिक तीव्र होती हैं।

NOTES

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS

• शहरी - ग्रामीण क्षेत्र — सामान्यतः यह देखा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों के लोगों की मनोवृत्ति अधिक उदार होती है। स्टाउफर एवं उनके सहयोगियों (1977) ने अपने अध्ययन में पाया है कि ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के छात्रों में धार्मिक एवं यौन पूर्वाग्रह कम होता है।

• सामाजिक संघर्ष (Social conflict) — विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच में संघर्ष से भी पूर्वाग्रह की उत्पत्ति होती है। किसी समूह या राष्ट्र के साथ संघर्ष होने पर व्यक्तियों की मनोवृत्ति उस समूह या राष्ट्र के प्रति प्रतिकूल हो जाती है और लोग उस राष्ट्र या समूह के प्रति अधिक पूर्वाग्रही व्यवहार दिखलाने लगते हैं।

• जनसंपर्क माध्यम (Mass media) — पूर्वाग्रह निर्माण में जनसंपर्क माध्यमों का भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इनके माध्यम से हमें दूसरे व्यक्तियों, समूहों एवं राष्ट्र के बारे-बारे में अनेक प्रकार की नकारात्मक एवं सकारात्मक सूचनाएँ मिलती हैं, जिसके आधार पर भी पूर्वाग्रह विकसित होती है।

• सामाजिक सीखना — समाजीकरण के दौरान प्रत्येक बच्चे अपने माता-पिता, पास-पड़ोस आदि से दूसरे के प्रति उपयुक्त व्यवहार करना एवं विश्वास आदि सीखता है। इस प्रक्रिया द्वारा उन्हें जैसी शिक्षा दी जाती है, उनमें वैसी ही मनोवृत्ति का विकास होता है। यही कारण है कि यदि माता-पिता किसी जाति या वर्ग के प्रति पूर्वाग्रही होते हैं, तो बच्चों में भी उस वर्ग या जाति के प्रति उसी ढंग का पूर्वाग्रह विकसित हो जाती है।

→ मनोवैज्ञानिक एवं संवेगिक कारक या स्रोत — ~~इसके~~ अन्तर्गत उन कारकों पर बल दिया गया है, जो व्यक्ति में संवेग जैसे - कुण्ठा, आक्रमकता, चिंता, ~~[illegible]~~ असुरक्षा

NOTES

आदि उत्पन्न कर व्यक्ति को पूर्वाग्रही करता है ऐसे प्रमुख कारक निम्नांकित हैं —

• कुंठा एवं आक्रामकता (Frustration and Aggression) — कुंठा से भी व्यक्ति में पूर्वाग्रह की उत्पत्ति होती है इसे पूर्वाग्रह का कुंठा सिद्धान्त या 'बलि का बकरा' सिद्धान्त भी कहा जाता है इस सिद्धान्त का आधार विस्थापित आक्रमण है इस सिद्धान्त के अनुसार जब व्यक्ति अपने लक्ष्य पर किसी बाधा के कारण नहीं पहुँच पाता है तो उसमें कुंठा उत्पन्न होती है इस कुंठा के कारण वह बाधक स्रोत के प्रति आक्रामक हो जाता है यदि बाधक स्रोत अधिक मजबूत होता है तो वह अपना वैर भाव एक कमजोर स्रोत की ओर विस्थापित कर लेता है इस विस्थापन के कारण कमजोर स्रोत पूर्वाग्रह का निशाना बनता है अर्थात 'बलि का बकरा' बन जाता है

• सत्तावादी व्यक्तित्व (Authoritarian Personality) — मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में सत्तावादी व्यक्तित्व तथा पूर्वाग्रह के बीच धनात्मक संबंध पाया है एडोरनो एवं उनके सहयोगियों (1950) ने अपने अध्ययनों के द्वारा यह दिखलाया है कि जिन व्यक्तियों में सत्तावादी शीलगुण जैसे — दृढ़ चिंतन, दण्डात्मक प्रवृत्ति आदि प्रधान होता है, उनमें उन व्यक्तियों की अपेक्षा पूर्वाग्रह अधिक होता है, जिनमें ऐसे शीलगुणों का अभाव होता है

• असुरक्षा और चिंता (Insecurity and Anxiety) — व्यक्ति में पूर्वाग्रह असुरक्षा की भावना तथा चिंता से भी विकसित होती है जब व्यक्ति में चिंता का स्तर अधिक होता है तो उनमें पूर्वाग्रह की मात्रा भी बढ़ जाती है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में चिंता तथा पूर्वाग्रह के बीच धनात्मक सहसंबंध को बतलाया है जिस व्यक्ति में अपनी नौकरी, सामाजिक स्तर, आदि के बारे में असुरक्षा की एवं चिंता की भावना अधिक होती है वह हमेशा ऐसे व्यक्ति को निशाना बनाता है, जिसपर उसकी असुरक्षा का

Scanned with CamScanner

आरोप लगाया या उसके फलस्वरूप ऐसे व्यक्तियों में पूर्वाग्रह तेजी से विकसित होता है। जिस व्यक्ति में ऐसी असुरक्षा की भावना नहीं होती है, वह स्वभावतः अन्य व्यक्तियों या समूह के प्रति एक स्पष्ट एवं वस्तुनिष्ठ विचार विकसित करता है। आलपोर्ट (1952), गफ (1951) हैरिस (1950) ने भी अपने-अपने अध्ययनों में यह पाया है कि जिन व्यक्तियों में असुरक्षा की भावना अधिक होती है, उनमें पूर्वाग्रह की मात्रा भी अधिक होती है।

इसप्रकार स्पष्ट है कि पूर्वाग्रह की उत्पत्ति के अनेक कारण एवं स्रोत हैं, जिनमें सामाजिक-सांस्कृतिक कारक एवं मनोवैज्ञानिक कारक अधिक महत्वपूर्ण हैं और इनके द्वारा पूर्वाग्रह की उत्पत्ति को अधिक वैज्ञानिक तरीके से समझा जा सकता है।